मासिक पत्रिका फरवरी 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

क्या संस्कृत पढ़ने से अर्थार्जन नहीं हो सकता?

-श्रीशदेव पुजारी- **साभार:** 'परोपकारी', जनवरी (प्रथम) 2018

समाज में एक भ्रम फैलाया गया है कि, संस्कृत पढ़ने से छात्र **अर्थार्जन** नहीं कर सकता। उसे केवल शिक्षक बनना पड़ता है, या पुरोहित। मेरा, इस प्रकार की धारणा रखने वालों से प्रश्न है कि: जो **संस्कृतेतर** छात्र बी.ए., बी.कॉम, बी. एससी. होते हैं, उनके लिए कौनसी नौकरी, बाट जो रही है?

हमारे देश में स्नातक उपाधि को आधारभूत उपाधि माना जाता है। उसकी प्राप्ति के पश्चात्, आप प्रतियोगी (Competitive) परीक्षा उत्तीर्ण कर नौकरी पा सकते हैं। जो संस्कृत विषय लेकर स्नातक बनते हैं, उनके लिए किस प्रतियोगी परीक्षा का द्वार **बन्द** है? उत्तर आयेगा-किसी का नहीं। स्नातक बनने के पश्चात् अधिकतर छात्र प्रबन्धन शास्त्र (एम.बी.ए.) पढ़ते हैं। क्या संस्कृत से स्नातक, प्रबन्धन शास्त्र नहीं पढ़ सकते? संस्कृत के छात्र यू.पी.एस.सी. परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं। चोटीपुरा गुरुकुल की कन्या, यू.पी.एस.सी. परीक्षा में **तृतीय** स्थान पर आयी। लखनऊ के संस्कृत **परिवार** का युवक आई.ए.एस., इसी वर्ष हुआ। बहुत से छात्र यू.पी.एस.सी. परीक्षा के लिए संस्कृत विषय लेते हैं, यह मेरा अनुभव है। आई.आई.टी. या अन्य अभियन्त्रण (Engg.) शास्त्र पढ़े छात्र भी, पाठ्यक्रम के विषयों को छोड़कर, आई.ए.एस. बनने के लिए **'संस्कृत-भारती'** के पास आते हैं। आश्चर्य तब हुआ जब एक मुसलमान बी.टेक की हुई छात्रा, संस्कृत सीखने 'संस्कृत-भारती' की ओर से संचालित संवादशाला में पहुँची। वहाँ १४ दिन का **आवासीय** शिविर होता है। वह यू.पी.एस.सी. की परीक्षा देने वाली थी।

विश्वभर में **योग** का प्रचलन बढ़ रहा है, यह सर्वविदित है। किन्तु अधिकतम लोगों को **योग** के नाम पर केवल आसन और प्राणायाम का कुछ हिस्सा ज्ञात है। 'अष्टांग योग' की ओर अब **कुछ** लोग (विशेषकर विदेशी) उन्मुख होने लगे हैं। उन्हें पढ़ायेगा कौन? जो 'योग दर्शन' का **ज्ञाता** है वही न? क्या विश्व की जिज्ञासा शान्त करने के लिए हमारे पास 'योग-दर्शन' के पर्याप्त शिक्षक हें? इस वर्ष भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय द्वारा, पहला प्रयास किया गया है। 'योग दिवस' के निमित्त भारत से कुछ योग-दर्शन जानने वाले विद्वानों को, विदेशों में भेजा गया। यह **माँग** बढ़ने वाली है। विश्व के कुछ ही देश आंगल-भाषा समझते हैं। शेष सब, अपनी-अपनी भाषा में पढ़ते हैं, जैसे-जर्मन, फ्रेंच, रशियन, जापानी, चीनी, हीब्रू इत्यादि। इसलिए इन देशों में योग-दर्शन पढ़ाना है तो, पहले संस्कृत **पढ़ानी** होगी। आंग्ल भाषा से काम नहीं चलेगा। विश्व की सभी भाषाएँ (जानने वाले) दार्शनिक बने, यह तो सम्भव नहीं है। वैसे भी योग शास्त्र-**भाष्य ग्रन्थ**, टीका ग्रन्थ इत्यादि पढ़ने के लिए, संस्कृत आना अनिवार्य है।

यही हाल **आयुर्वेद** का है। विदेशों में आयुर्वेद की औषधियों की माँग लगातार बढ़ रही है। कुछ समय पश्चात् आयुर्वेद पढ़ने के लिए विदेशी छात्र **प्रवृत्त** होंगे। तब आयुर्वेद के ग्रन्थों को पढ़ने के लिए संस्कृत का **ज्ञान** आवश्यक हो जाएगा। जो-जो अन्य भारतीय शास्त्र हैं, उनको पढ़ने के लिए भी संस्कृत अनिवार्य है। जैसी कि विदेशियों की **जिज्ञासु-प्रवृत्ति** है, वे अवश्य संस्कृत पढ़ेंगे। तब पढ़ाने वाले शिक्षकों

की **वैश्विक माँग** होगी। जैसा कि मैंने पूर्व में लिखा है-संस्कृत, आंगल माध्यम में नहीं सिखा पाएँगे। अत: अनिवार्य रूप से **संस्कृत माध्यम** में पढ़ाना पड़ेगा। क्या भारत के शिक्षक इसके लिए तैयार हैं?

यह मेरी कल्पना का विलास भर नहीं है। एक वर्ष पूर्व 'संस्कृत-भारती' के पास एक **स्पेनिश भाषी** architect महिला आयी। उसे भारतीय architecture पढ़ना था। उसको यह समझ में आ गया कि भारतीय architecture पढ़ने के लिए संस्कृत **आना अनिवार्य** है। उसने 'संस्कृत-भारती' के बेंगलूर कार्यालय में रुक कर संस्कृत **सीखी**। तत्पश्चात् भारतीय architecture पर उसने अपना 'प्रबन्ध' लिखा। यह हमारा दुर्भाग्य है कि, भारतीय अपनी विद्या सिखाने के लिए **तत्पर नहीं** हैं। नहीं तो, जैसे आयुर्वेद के पाठ्यक्रम में संस्कृत सीखना **अनिवार्य** है, वैसा सभी व्यावसायिक महाविद्यालयों में होता। वर्तमान केन्द्र सरकार ने योजनापूर्वक व्यावसायिक महाविद्यालयों में **ऐच्छिक विषय** के रूप में संस्कृत लाने का प्रयास प्रारम्भ किया है। लगभग **दो सौ** महाविद्यालयों में जहाँ संस्कृत विषय पाठ्यक्रम का **हिस्सा नहीं** है, वहाँ केन्द्र सरकार ने अपनी ओर से वेतन की व्यवस्था कर **प्राध्यापक को भेजा** है। इच्छुक छात्र एवं प्राध्यापक संस्कृत की कक्षाओं में बैठते हैं।

जहाँ तक विद्यालयीन-शिक्षा (School-education) का सम्बन्ध है, सर्वाधिक शिक्षक आंगल भाषा के हैं। तत्पश्चात् संस्कृत का ही **क्रम** आता है। **उच्च** शिक्षा में तो संस्कृत प्राध्यापकों की संख्या **सर्वाधिक** है। कारण, सामान्य महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा दी जाती है। इस कारण प्राध्यापक भी नियुक्त होते हैं। इसके अलावा **१५ की संख्या** में संस्कृत के विश्वविद्यालय हैं। इतनी संख्या में तो, किसी विषय के विश्वविद्यालय नहीं है। प्रत्येक संस्कृत-विश्वविद्यालय में कम से कम साहित्य, व्याकरण, **दर्शन, वेद, ज्योतिष** एवं **शिक्षाशास्त्र**-ये विभाग तो होते ही हैं। अत: प्रत्येक विभाग में आचार्य, सह आचार्य, सहायक आचार्य-ये पद तो सृजित किये ही जाते हैं। इस कारण महाविद्यालयीन प्राध्यापकों की संख्या बढ़ जाती है।

जहाँ तक पुरोहितों का प्रश्न है, वे तो ८ वर्ष की अवस्था में गुरुकुल में प्रविष्ट होते हैं। वहाँ **६ से १२ वर्ष** तक वेदाध्ययन कर गुरुकुल के विद्यार्थी पौरोहित्य करने लगते हैं। समाज में पुरोहितों की **आवश्यकता अधिक** होने के कारण '**वैदिकों**' को **१४वें** वर्ष में ही धन, दक्षिणा के रूप में प्राप्त होने लगता है। इस प्रकार का **कौन सा** पाठ्यक्रम भारत में है जो वय के १४ वर्ष से ही धन देने लगे? और तो और, क्या यजमान और क्या उसकी पत्नी, उसके घर के सभी व्यक्ति पुरोहित के चरण-स्पर्श करते हैं। अत: संस्कृत या वेद का विद्यार्थी अन्य विषयों की अपेक्षा **कम बेरोज़गार** है।

सामान्यत: भारतीय भाषा के पत्रकार लिखते या बोलते समय **अशुद्ध भाषा** का प्रयोग करते हैं। अत: यदि संस्कृत-भाषा आत्मसात किया हुआ व्यक्ति स्तम्भ लेखक या '**संवाददाता**' बन जाता है तो, **वार्ता** लेखन या कथन में शुद्धता आयेगी, तभी समाज भी शुद्ध भाषा का प्रयोग सीखेगा।

अत: निवेदन है कि संस्कृत के अध्ययन से अर्थार्जन कैसे होगा, यह चिन्ता **त्यागें**, और अधिक संख्या में संस्कृत सीखें। ■■

FOLLOW THE ADVICE OF YOUR PARENTS AND YOU WILL ALWAYS SUCCEED

Curtsey : Hindustan Times

Hard work and humility are the **keys** to Success. There is no short cut to success in any field. People who work hard are bound to be successful, even if they face hurdles in the beginning. Many people have a wrong notion that their children can be successful in life, if they go to the best of schools/colleges and join premier Institutes such as IITs and IIMs. However, unless the children know the **value** of working hard, no institute can help them to achieve their goals. Forcing children into something **against** their wishes is one of the main reasons for many students committing suicides. Secondly, even if a person is successful with his/her hard work and rises to great heights in social life and career, he or she may not be able to **sustain** the achievements. Many times we see successful people become arrogant, once they attain a certain level in their personal and professional lives. They many become arrogant and treat others working with them, as subordinates. A successful person who is **not** humble, is bound to fall down. So, being humble, even after being successful is the **essence** of noble living. Let young parents **inculcate** the habits of humility and hard work in their children, right through their formative years. However, to inculcate these two virtues, the parents must **themselves** be hard-working and humble as in most cases the children emulate their parents.

(Inner Voice comprises contributions from our readers.)

फरवरी 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
04	श्री नरेश सोलंकी (9717637632)	सुमधुर भजन
11	डॉ. महावीर मीमांसक (9811960640)	वेद पढ़ने का अधिकार : स्वामी दयानन्द और स्वामी शंकराचार्य के अनुसार, किसको?
18	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	पं. लेखराम जी का बलिदानी जीवन।
25	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	सिद्धांतवाद - 'एक ईश्वरवाद' की व्याख्या।

सम्पादक: सतीश चन्द्र सक्सेना

जनवरी मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्री इन्द्र सैन साहनी	10,200/-	श्री जी.के. सोनी	2,000/-	श्री एस.सी. गर्ग	1,100/-
श्री एस.सी. सक्सेना	6,100/-	श्रीमती सीता धवन	2,000/-	श्रीमती बाला अशोक शर्मा	1,000/-
श्री सुदर्शन बहल सुपुत्र, श्री प्रेम कृष्ण बहल	5,100/-	डॉ. विनोद मलिक	1,600/-	श्रीमती दीपिका सहाय	1,000/-
		श्री पुनीत गर्ग	1,500/-	श्री प्रेम मेहता	1,000/-
श्री राजीव भटनागर	5,100/-	श्री अरुण बहल	1,500/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्रीमती गीता आनन्द	5,000/-	तनेजा फाउण्डेशन - श्री आर.के. तनेजा	1,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्रीमती विमला कपूर	5,000/-			श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री प्रताप गुलयानी	5,000/-	श्रीमती संतोष मुंजाल	1,100/-	श्रीमती कान्ता मदान	501/-
श्री मूल राज अरोड़ा	2,100/-	श्रीमती सुशीला गुलाटी	1,100/-	श्री बी.आर. मल्होत्रा	500/-
डॉ. रजनीश दुग्गल	2,100/-	श्री डी.एन. मनचन्दा	1,100/-		

जनवरी माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 10,701/-

❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 4,600/-

स्वर्ण जयन्ती 'स्मारिका' : "आपसे निवेदन"

पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके आर्य समाज ने 50 वर्ष पूर्ण होने पर, अप्रैल-2018 में एक '**स्मारिका**' निकालने की योजना बनाई है।

इसमें आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों के लेख होंगे, तथा हमारे समाज की ऐतिहासिक भूमिका, व अन्य गतिविधियों का भी उल्लेख होगा। समाज के सब सदस्यों में तो यह वितरित होगी ही, साथ ही निकट के आर्य समाजों को भी भेजी जायेगी।

सदस्यगण इसलिए आपसे, 'स्मारिका' में **विज्ञापन** देने के लिये, निवेदन है। कृपा कर, इस विषय पर श्री विजय लखनपाल, प्रधान जी से समाज में 20 फरवरी, 2018 तक सम्पर्क करें।

■■

तनाव दूर करने में सहायक हो सकता है गन्ना

साभार: दैनिक जागरण, 1, सित. 2017

गन्ना कई तरह से स्वास्थ्य के लिए लाभदयक है। जापान में भारतीय मूल के शोधकर्ता के नेतृत्व वाले दल ने, इसके एक और फायदे का पता लगाया है। विशेषज्ञों का कहना है कि गन्ने और अन्य खाद्य पदार्थों में, पर्याप्त मात्रा में मिलने वाला **'ओक्टाकोसानोल'** (Octacosanol) **तनाव** दूर कर अच्छी नींद में सहायक है। **सुकूबा** (Sukuba) यूनिवर्सिटी के **महेश कौशिक** और **योशीहीरो उरादे,** ने बताया कि इस पदार्थ के **नियमित सेवन** से, इन्सोम्निया (Insomnia) या अनिद्रा जैसी गंभीर समस्या से **निदान** पाया जा सकता है। अच्छी नींद **नहीं** लेने से, मानसिक तनाव के अलावा **मोटापे** का खतरा भी रहता है। उन्होंने बताया कि ओक्टाकोसानोल, रक्त में मौजूद 'कॉर्टिकोस्टेरॉन' (Corticostaron) नामक **हॉर्मोन** की मात्रा को **कम** करता है। रक्त में इसकी **ज्यादा** मात्रा तनाव का **सूचक** है। तनाव दूर करने वाली मौजूदा दवाओं में ओक्टाकोसानोल **नहीं** होने के कारण स्वास्थ्य पर **प्रतिकूल** असर पड़ता है।

■■

ओ३म्

आर्य समाज महिला सत्संग

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048

आप सभी को सूचित करते हुए हर्ष है कि, प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी, आर्य समाज महिला सत्संग-ग्रेटर कैलाश-1 की माघ यज्ञ की पूर्णाहुति, **8 फरवरी, 2018 (बृहस्पतिवार)** को सम्पन्न होगी। कार्यक्रम इस प्रकार है-

पूर्णाहुति व समापन समारोह

दिनांक बृहस्पतिवार, 8 फरवरी 2018

अध्यक्षा	:	श्रीमती सन्तोष जी मुंजाल	
यज्ञ	:	ब्रह्मा आचार्य वीरेन्द्र विक्रम	प्रात: 10:00 से 11:00 तक
प्रवचन	:	ब्रह्मा जी द्वारा	प्रात: 11:00 से 11:45 तक
भजन	:	श्रीमती प्रतिभा जी	दोपहर 11:45 से 12:00 तक
प्रवक्ता	:	डा. महेश विद्यालंकार	दोपहर 12:00 से 12:45 तक
आशीर्वचन	:	डॉ. उषा शर्मा	
धन्यवाद	:	अध्यक्षा द्वारा	दोपहर 12:45 से 1:00 तक
ऋषि लंगर	:	दोपहर 1:00 बजे से	

प्रधाना	उप-प्रधाना	मंत्राणी	कोषाध्यक्ष
संतोष रहेजा	**अमृत पॉल**	**प्रेम शर्मा**	**स्नेह वर्मा**